बी० ए० पार्ट–3 हिन्दी साहित्य (प्रतिष्ठा)

डॉ० आशा कुमारी

अंशकालीन व्याख्याता

हिन्दी विभाग

मगध महिला कॉलेज, पटना

मोबाइल नम्बर–9304098602,7004661162

Email _ ashakumari2500@Gmail.com.

प्रेमचन्द के उपन्यासों में 'गबन' का स्थान

'गबन' से पूर्व यों तो प्रेमचन्द 'सेवासदन', 'निर्मला', और 'रंगभूमि' जैसे उच्चकोटि के उपन्यास लिख चुके थे, किंतु 'गोदान' लिखने के पूर्व 'गबन' ही उनकी सर्वोत्तम रचना मानी जाती है। स्वयं प्रेमचंद जी भी अपनी सर्वोत्कृष्ट उपन्यास रंगभूमि को ही माना है। कारण उस समय तक 'गोदान' की रचना नहीं हुई थी। अतः सर्वागीण रूप से विचार करने पर 'गबन' ही उनके उस समय तक प्रकाशित उपन्यासों में सबसे अच्छी कृति ठहरती है। इसके कई कारण है–

(1) इस रचना में प्रेमचंद ने यथार्थवाद का आश्रय लेकर मध्यवर्ग की खोखली प्रदर्शन–प्रियता का भंडाफोड़ किया है।

(2) इसी प्रदर्शन की भावना को दिखाने के लिए दंपतियों में अवास्तविक संबंधों ,धन को अवैध रीति से प्राप्त करने के हथकंडों और आभूषण–प्रियता का कच्चा चिट्ठा भी खोला गया है।

'गबन' के प्रकाशन से पूर्व प्रेमचंद जी ने सात उपन्यासों को लिखा। जिनमें प्रतिज्ञा, सेवासदन, वरदान, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, निर्मला। कर्मभूमि, गोदान, मंगलसूत्र, 'गबन' के बाद लिखे गये।

शुरू के दो उपन्यासों को पाठकगण को प्रेमचन्द जी का प्रारम्भिक प्रयास समझना चाहिए। इनमें उसकी कला के तत्व अस्थिर हैं और वह स्वयं लक्ष्य रहित है, किंतु इन अपरिपक्व रचनाओं का भी 'गोदान' तक के विकास को समझने के लिए अपना महत्व है। अपनी कला के उतुंग शिखर पर पहुँचने के मार्ग के ये 'प्रवेश द्वार' हैं।

'वरदान', 'प्रतिज्ञा' की अपेक्षा अधिक हवाई ढंग का उपन्यास है। इसमें प्रेमचन्द एक साधारण कथाकार के रूप में हमारे सामने आते है। उपन्यास का कथानक सामाजिक है और इसमें असफल प्रेम के चित्र उपस्थित किये गये है। प्रताप और विरजन बचपन के

साथी थे, किंतु किन्हीं कारणों से उनका विवाह न हो सका। विरजन का विवाह उसकी इच्छा के विपरीत प्रताप के सहपाठी कमलाचरण से हुआ, किंतु वह साध्वी पत्नी को पाकर भी संमार्ग पर न लाया जा सका। उसने एक माली की लड़की के प्रेम में फँसकर चरित्र–हीनता का ही परिचय नहीं दिया बल्कि पकड़े जाने के भय से आत्म–हत्या भी कर ली। उधर प्रताप ने विरक्त होकर संयास ले लिया और बालाजी के नाम से प्रसिद्धि पाई। अंत में विरजन के आग्रह पर उसने उसकी सखी माधवी से विवाह करने के लिए संयास को तिलांजलि देने का निश्चय किया तो माधवी संयासिनी बनने को संनद्ध हो गई और इस प्रकार उपन्यास को समाप्त कर दिया गया। विश्लेषण करने पर 'वरदान' का हल्कापन स्वतः सिद्ध हो जाता है। इसमें वह भाग तो और भी ढीला है, जहाँ विरजन को प्रताप के प्रेम में बीमार दिखाकर कमलाचरण के प्रेम में भी विह्वल बताया गया है और अति –रंजित प्रेमपात्र लिखवाये।

'प्रतिज्ञा' उपन्यास में भी समस्या तो प्रेम की ही उठाई गयी है, किंतु यह 'वरदान' की अपेक्षा अधिक सबल रचना है। वकील अमृतराय और प्रोफेसर दीनानाथ एक ही लड़की प्रेमा को चाहते है। प्रेमा का विवाह दीनानाथ से हो जाने पर भी समस्या का समाधान नहीं होता। दयानाथ प्रेमा के चरित्र पर संदेह करते है। उधर अमृतराय वनिताश्रम नाम से एक आश्रम की स्थापना करते है। कथा के एक दूसरे भाग में कामताप्रसाद को विवाहित होकर भी पूर्ण नामक विधवा से प्रेम करते दिखाया गया है। इसके प्रतिपादन में कमलाप्रसाद को पूर्णा से मार खानी पड़ी। पूर्णा को अमृतराय के वनिताश्रम में पहुँचाकर और कमलाप्रसाद एवं उनकी पत्नी सुमित्रा में सुलह करवाकर उपन्यास का अंत हुआ है। इस उपन्यास में मनोवैज्ञानिक दृष्टि से प्रेमी के मनोभावों का चित्रण हुआ और यही इसकी विशेषता है।

'सेवासदन' में प्रेमचन्द ने वेश्या–समस्या को उठाता है और उसका समाधान इस प्रकार दिया है कि उनको शहर से बाहर दूर बसाया जाए एवं उनकी संतानों को सुसभ्य बनाने के लिए 'सेवासदन' जैसे आश्रमों का निर्माण हो । ऐसी समस्या का प्रेमचंद का यह प्रिय समाधान हैं इस उपन्यासों में ब्रिटिश पुलिस पद्धति की भी तीव्र आलोचना हुई है जिसके अनुसार कोई भी व्यक्ति ईमानदार नहीं रहने दिया जाता। इसी के जाल में फँसकर कृष्णचंद जेल गए, उनका घर उजड़ा लड़की वेश्या बनी और अंत में उन्हें आत्माहत्या करनी पड़ी। इस उपन्यास में झूठे साधु–मंहतों की भी पोल खोली गई है।

'सेवासदन' के उपरांत प्रेमचंद का अन्य प्रौढ़ उपन्यास 'प्रेमाश्रम' है जिसकी समस्या राजनीतिक है। इसमें जमींदार और किसानों का संघर्ष दिखाया गया है। जमींदारों के साथ कारिंदों, वकीलों, पुलिस अफसरों और डाक्टरों के निरीह जनता पर अत्याचारों का भी प्रभावशाली वर्णन किया है। जमींदार ज्ञानशंकर के अत्याचार और पाप–शीला को लेकर किसानों पर अत्याचार का बड़ा मार्मिक वर्णन है। इसमें किसानों में बढ़ते हुए विद्रोह का भी मनोहर और बलराज के चरित्रों द्वारा प्रतिनिधित्व दिखाया गया है।

कला की दृष्टि से 'निर्मला' अत्यंत निर्मल कृति है। 'सेवासदन' की विवश नारी यहाँ वेश्या न होकर वृद्ध–विवाह की शिकार है। दम घोंटने वाली भारतीय दहेज–प्रथा के कारण निर्मला का विवाह बूढ़े तोताराम से कर दिया जाता है। जिसकी पहली पत्नी मर गई थी। और तीन लड़के थे। बड़ा लड़का मँशाराम निर्मला की आयु का था। बस वकील तोताराम के संदेह का यही कारण बना और उन्होंने मँशाराम को बोडिंग हाउस में भर्ती करवा दिया। वहाँ बीमार होकर मँशाराम चल बसा। तोताराम का मँझला लड़का चोर बन गया और छोटा घर से भाग गया। तोताराम भी उसे ढूँढ़ने चल दिये। घर मे रह गई निर्मला जिस पर पहले ही विपतियों का पहाड़ था। डाक्टर सिन्हा से निर्मला का पहले विवाह होना था। डॉक्टर साहब को इस घटना का पता चलने पर उनका निर्मला का पहले विवाह होना था। डॉक्टर साहब को इस घटना का पता चलने पर उनका निर्मला की ओर बढ़ना शुरू हुआ। निर्मला द्वारा भर्त्सना होने पर उन्होंने आत्म–हत्या कर ली। उपन्यास का कारूण्कि अंत निर्मला की मृत्यु से होता है। इसमें यह दिखाया गया है कि विमाता सदैव कुमाता नहीं होती। इस उपन्यास में प्रेमचंद के अन्य उपन्यासों की तुलना में कला की दृष्टि से एक ही कमी प्रतीत होती है वह है पात्रों की अधिक मृत्यु। इसी कारण यह 'ट्रेजडी' बन गया है।

'रंगभूमि' को तो स्वयं प्रेमचंद अपना सर्वोतम उपन्यास कहा करते थे। पहली बार व्यापक धरातल पर इसमें संपूर्ण जीवन को समेटने का प्रयत्न किया गया है। राजनीति, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक दृष्टि से इसमें जीवन के विविध पक्षों का विशद् वर्णन हुआ है। इस उपन्यास के महत्वपूर्ण पात्र सूरदास और सोफिया है। सूरदास गाँधीवाद का प्रतीक और उठते हुए जन–आंदोलन का नेता है। वह अंधा भिक्षुक होकर भी सरकार को हिलाने का दम रखता है। उपन्यास में ईसाई धर्म के सत्य स्वरूप का भी उद्घाटन हुआ है। देशी रियासतों और उनके नाममात्र के शासकों की असहाय अवस्था, पोलिटिकल एजेंटों की क्रूरता, ब्रिटिश सरकार की कूटनीति एवं क्रान्तिकारियों के षड्यंत्रों जैसे विविध घटनाचक्रो से 'रंगभूमि' का कथानक बड़ा विस्तृत और जटिल बन गया है। प्रेम की समस्या इसमें भी है और बड़ी करूण है। विनय और सोफिया प्रेमी होकर भी धर्म–बंधन के कारण आजीवन विवाह न कर सके। प्रेमचंद के प्रिय आदर्शवाद का भी इसमें गहरा रंग है। किंतु इतने व्यापक धरातल पर जीवन को देखने के कारण इस उपन्यास की कथावस्तु स्वभावतः शिथिल हो गई है।

'गबन' से पूर्व प्रकाशित कायाकल्प को पढ़कर तो सहसा यह विश्वास ही नहीं होता कि यह 'सेवासदन' 'निर्मला' और रंगभूमि के लेखक की कृति है। इस उपन्यास में प्रेमचंद अपनी स्वाभाविक धारा त्याग कर जन्म–जन्मांतरवाद और प्रेम की नित्यता के चक्र मे उलझ गये है। इस उपन्यास से उनकी ख्याति में कोई वृद्धि नहीं हुई है। दो कथाओं को लेकर उपर्युक्त सिंद्धांतों का प्रतिपादन हुआ है, बिना यह जाने कि इनकी सत्यता निर्विवाद नहीं।

'गबन' से पूर्वारचित उपन्यासों को संक्षिप्त चर्चा के उपरांत हम उनके गुण दोषों की पृष्ठभूमि में यह कह सकते हैं कि 'गबन' प्रेमचंद की अत्युत्तम रचना है। यह कृति 'गोदान' छोड़कर अद्वितीय है। इसकी सफलता का मूल कारण है। प्रेमचंद द्वारा अपने पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर यथार्थ के चश्में से समाज को देखने का प्रयत्न। इस उपन्यास में उस मध्यवर्ग की झूठी कलई खोली गई है जो अपने स्वाभाविक रूप पर मुलंमा चढाकर ऊँचा होने का दंभ किया करता है।

रमानाथ की समस्या वैयक्तिक नहीं, वह संपूर्ण मध्यवर्ग के खोखलेपन का प्रतिनिधि है। इस उपन्यास की विशेषता पात्रों के मनोवैज्ञानिक चित्रण में है। प्रत्येक पात्र अपना यथार्थ रूप लिए सामने आता है। इसका अर्थ नहीं कि इसमें प्रेमचंद अपने आर्दशवादी दृष्टिकोण से मुक्त हो गये है। अपनी इस प्रवृति का प्रदर्शन तो वह यदा–कदा करते ही है। जालपा की आभूषण–प्रियता त्याग, पतिभक्ति, समाजसेवा और साधुता में बदल जाती है। 'सेवासदन' की सुमन परित्यक्ता होने पर स्खलित होती चली जाती है। किंतु जालपा ऐसा अवसर आने पर अपनी उदारता का परिचय देती है। देवीदीन खटिक भी आर्दशवादी तत्वों से निर्मित है। पूर्णतया यथार्थ पात्र है तो रमानाथ, जिसके चरित्र में पग–पग पर कृत्रिम आवरण और झूठ की कलई है। 'गबन' में निर्मला की तरह रतन का विवाह बूढ़े इंद्रभूषण वकील से करवाया गया है। पतिविहीना होने पर वह उसकी संपति की अधिकारिणी भी नहीं रहती। निराश्रिता नारी खीझकर संयुक्त परिवार को अपने क्रोध का लक्ष्य बनाती है–''बहिनो, किसी सम्मिलित परिवार में विवाह न करना और अगर करना हो तो जब तक अपना घर अलग न बना लो चैन की नींद मत सोना।'' (गबन) पृष्ठ266

राजनीति स्तर पर जन–आंदोलन के दर्शन इस उपन्यास में भी होते है। 'रंगभूमि' में इसका जैसा रूप था। वैसा इस उपन्यास में नहीं है, किंतु उसके बाद की स्थिति के संकेत स्पष्ट हैं। देवीदीन के लड़के पिकेटिंग करते हुए स्वदेशी प्रचार के लिए शहीद हो जाते है। देवीदीन भी अपने निश्चय पर दृढ़ रहकर अंत में विदेशी कपड़े की ब्रिकी बंद करवा ही लेता है। झूठे नेताओं के चरित्रों की वास्तविकता के विषय में देवीदीन के वचन बड़े तीक्ष्ण है। प्रेमचंद की यह भविष्यवाणी आज हम सत्य देख रहे है–''इन बड़े–बड़े आदमियों के किए कुछ न होगा। इन्हें बस रोना आता है..... बड़े–बड़े देशभक्तों को बिना विलायती शराब के चैन नहीं आता। उनके घर में जाकर देखों तो एक भी वैसी चीज न मिलेगी। गबन (पृष्ठ–171)

गबन के उपरांत यदि दृष्टि पहुँचती है तो सीधी 'गोदान' पर शेष उपन्यास यथार्थ की दृष्टि से हल्के ही रहेंगे। किसी आलोचक ने ठीक ही कहा है कि –'' प्रेमचन्द के प्राक–गोदान युग के उपन्यासों में दो ही उपन्यास यथेष्ट रूप में गबन का कथानक कुछ शिथिल होने पर भी इस शिथिलता की क्षति–पूर्ति उसके विषय की विस्तृति से हो जाती है।''